नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

व्यवस्था सुधारने के लिए बड़ी सर्जरी की जरूरत

इंदौर के एमवायएच अस्पताल में चूहों द्वारा नवजातों को कुतरने की घटना ने न केवल मध्यप्रदेश बल्कि पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है. यह घटना स्वास्थ्य तंत्र की भयावह लापरवाही की मिसाल है. मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने स्वत: संज्ञान लेकर सरकार से जवाब तलब किया है. अदालत का यह कदम बेहद आवश्यक था, क्योंकि यह मामला केवल अस्पताल प्रबंधन की चूक नहीं, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं में व्याप्त गहरी उदासीनता और जवाबदेही की कमी को उजागर करता है.

यह तथ्य बेहद चिंताजनक है कि राज्य स्तरीय जांच समिति की रिपोर्ट में जिस प्रकार लापरवाही सामने आई, वह अस्पतालों की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठाती है. एमवायएच जैसे प्रतिष्ठित सरकारी अस्पताल में न तो रोडेंट कंट्रोल कमेटी की बैठकें होती थीं, न ही इंफेक्शन कंट्रोल कमेटी सक्रिय थी. यह सीधे-सीधे उस व्यवस्था की विफलता है, जो मरीजों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी. नवजात शिशुओं जैसे संवेदनशील मरीजों को चूहों से सुरक्षित न रख पाना चिकित्सा तंत्र की असंवेदनशीलता का चरम है. सरकार ने जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई करते हुए विभागाध्यक्षों को हटाने, प्रभारी डॉक्टर को निलंबित करने और पेस्ट कंट्रोल कंपनी एजाइल का अनुबंध समाप्त करने के निर्देश दिए हैं. यह कदम स्वागतयोग्य हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल अनुबंध निरस्त कर देने या डॉक्टरों को हटाने भर से समस्या का समाधान होगा?

असलियत यह है कि अस्पतालों में सिस्टमेटिक निगरानी, जवाबदेही और पारदर्शिता की संस्कृति विकसित किए बिना ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोक पाना संभव नहीं है. एमवायएच में पेस्ट कंट्रोल का काम एजाइल कंपनी को सौंपा गया था, लेकिन उसकी लापरवाही उजागर हुई है.यहां ठेकेदारी व्यवस्था की खामियां भी सामने आती हैं. कंपनियां केवल औपचारिकता निभाती हैं और अस्पताल प्रशासन आंखें मूंद लेता है. जब तक अस्पताल प्रबंधन स्वयं सक्रिय भूमिका नहीं निभाएगा, बाहरी कंपनियों के भरोसे मरीजों की सुरक्षा संभव नहीं. इस घटना ने राजनीतिक प्रतिक्रिया भी उत्पन्न की. बहरहाल, घटना का एक और गंभीर पहलू यह है कि एमवाय अस्पताल अधीक्षक डॉ. अशोक यादव घटना के बाद अचानक 15 दिन की छुट्टी पर चले गए. यह कदम सवाल खड़े करता है कि क्या यह केवल स्वास्थ्य कारणों से हुआ या जिम्मेदारी से बचने का प्रयास है ? किसी भी आपात स्थिति में नेतृत्व का दायित्व बढ़ जाता है, और छुट्टी पर जाना जिम्मेदारी से भागने जैसा प्रतीत होता है.

एमवायएच प्रकरण यह भी दर्शाता है कि हमारे अस्पतालों में प्रशासनिक बैठकों और समितियों को महज कागजी खानापूर्ति मान लिया गया है. रोडेंट कमेटी और इंफेक्शन कंट्रोल कमेटी की बैठकें यदि नियमित रूप से होतीं, तो शायद यह भयावह हादसा टल सकता था. यह केवल एक अस्पताल की समस्या नहीं, बल्कि पूरे स्वास्थ्य तंत्र की मानसिकता का प्रतिबिंब है. अब सवाल यह है कि आगे क्या? सरकार को चाहिए कि वह केवल दोषियों को दंडित कर इतिश्री न करे, बल्कि अस्पतालों में जवाबदेही तय करने के लिए एक ठोस निगरानी तंत्र स्थापित करे .सभी अस्पतालों में पेस्ट कंट्रोल और इंफेक्शन कंट्रोल पर सख्त मॉनिटरिंग हो, बैठकों के मिनट्स ऑनलाइन दर्ज हों और उनकी समीक्षा उच्च स्तर पर की जाए. साथ ही, अस्पतालों में रोगी सुरक्षा को लेकर जागरूकता अभियान भी चलाना होगा.

एमवायएच प्रकरण ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि स्वास्थ्य तंत्र आत्मसंतुष्टि और ढिलाई में डूबा रहा, तो मरीजों की सुरक्षा भगवान भरोसे ही रहेगी. यह केवल एक प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं की हत्या है. अदालत के हस्तक्षेप से इस मामले में कठोर जवाबदेही सुनिश्चित हो, यही समाज की अपेक्षा है.सरकार को अब यह साबित करना होगा कि वह केवल संकट टलने तक नहीं, बल्कि दीर्घकालिक सुधार की दिशा में गंभीर है.

पूर्वी क्षेत्र भारत की विकास यात्रा का केंद्र

अश्विनी वैष्णव

कई दशकों तक, पूर्वोत्तर को विकास की बाट जोहने वाला एक सुदूर सीमांत क्षेत्र माना जाता था. पूर्वोत्तर राज्यों में रहने वाले हमारे भाई-बहन तरक्की की उम्मीदें तो रखते थे, लेकिन जिस बुनियादी ढांचे और अवसरों के हकदार थे, वे उनकी पहुंच से दूर रहे. यह सब तब बदल गया जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक्ट ईस्ट नीति की शुरुआत की. जिस पूर्वोत्तर को कभी सुदूर सीमांत माना जाता था, आज उसकी एक अग्रणी क्षेत्र के रूप में पहचान स्थापित हो चुकी है.

शांति, समृद्धि और प्रगति- यह बदलाव रेलवे, सड़कें, हवाई अड्डे और डिजिटल कनेक्टिविटी में रिकॉर्ड निवेश की वजह से संभव हुआ है. शांति समझौते स्थिरता ला रहे हैं. लोग सरकारी योजनाओं से लाभ उठा रहे हैं. स्वतंत्रता के बाद पहली बार उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को भारत की विकास यात्रा का केंद्र माना जा रहा है. रेलवे में किए गए निवेश को ही देख लीजिए. वर्ष 2009 की तुलना में वर्ष 2014 में क्षेत्र के लिए रेलवे बजट पांच गुना बढ़ा है. सिर्फ इस वित्तीय वर्ष में ही 10,440 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है. वर्ष 2014 से वर्ष 2025 तक कुल बजट आवंटन 62,477 करोड़ रुपये रहा है. वर्तमान में 77,000 करोड़ रुपये की रेलवे परियोजनाएं संचालित हैं. इससे पहले उत्तर-पूर्व ने इतना बड़ा निवेश कभी नहीं किया गया.

पूरे देश में विकास- देशभर में रेलवे में रिकॉर्ड स्तर पर बदलाव हो रहा है. हाल ही में 100 से अधिक अमृत भारत स्टेशनों का उद्घाटन किया गया है और 1200 और स्टेशन तैयार हो रहे हैं. ये स्टेशन यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं प्रदान करेंगे और शहरों को नए विकास केंद्र बनाएंगे. 150 से ज्यादा हाई-स्पीड वंदे भारत रेल यात्री सुविधा के नए मानक स्थापित कर रही हैं. साथ ही, लगभग पूरे नेटवर्क का विद्युतीकरण रेलवे को और हरित बना रहा है. वर्ष 2014 से अब तक 35,000 किलोमीटर नई पटरियां बिछाई गई हैं. यह उपलब्धि पिछले छह दशकों में हुए समग्र विकास कार्यों से कही अधिक है. सिर्फ़ पिछले वर्ष ही 3,200 किलोमीटर नई रेल लाइनें जोड़ी गईं. विकास की यह गति और बदलाव उत्तर-पूर्व में भी स्पष्ट नजर आ रहा है.

मिज़ोरम प्रथम- मिजोरम इस विकास गाथा का हिस्सा है. यह राज्य अपनी समृद्ध संस्कृति, खेल प्रेम और खूबसूरत पहाड़ियों के लिए जाना जाता है. फिर भी, यह दशकों तक संपर्क की मुख्यधारा से दूर रहा. सड़क और हवाई संपर्क सीमित था. रेल अब तक राजधानी तक नहीं पहुंच पाई थी. लोगों में आकांक्षाएं तो बलवती थीं, लेकिन विकास की मुख्यधारा अदृश्य थी, लेकिन अब हालात बदल चुके हैं. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों कल बैराबी-सैरांग रेलवे लाइन का उद्घाटन मिजोरम के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि है. 51 किलोमीटर लंबी यह परियोजना 8,000 करोड़ से अधिक की लागत से बनी है और पहली बार आइजोल को राष्ट्रीय रेल नेटवर्क से जोड़ेगी. इसके साथ ही, प्रधानमंत्री सैरांग से दिल्ली (राजधानी एक्सप्रेस), कोलकाता (मिज़ोरम एक्सप्रेस) और गुवाहाटी (आइजोल इंटरसिटी) के लिए तीन नई रेल सेवाओं का भी शुभारंभ करेंगे. यह रेलवे लाइन दुर्गम पहाड़ी इलाकों से होकर गुजरती है. रेल अभियंताओं ने मिजोरम को जोड़ने के लिए 143 पुल और 45 सुरंगें बनाई हैं. इनमें से एक पुल कुतुब मीनार से भी ऊंचा है. दरअसल, इस इलाके में, बाकी सभी हिमालयी लाइनों की तरह, रेलवे लाइन भी पहले एक पुल, फिर एक सुरंग और फिर एक पुल के रूप में आगे बढ़ती है.

हिमालय में सुरंग निर्माण की तकनीक- उत्तर-पूर्वी हिमालय अभी युवा पर्वत हैं, जिनके बड़े हिस्से नरम मिट्टी और जैविक पदार्थ से बने हैं. ऐसी स्थिति में सुरंग और पुल बनाना बेहद चुनौतीपूर्ण था. पारंपरिक तरीके यहां काम नहीं कर सकते थे, क्योंकि ढीली मिट्टी निर्माण का भार सहन नहीं कर पाती. इस समस्या को दूर करने के लिए हमारे अभियंताओं ने एक नया और अनोखा तरीका विकसित किया, जिसे अब हिमालयन टनलिंग मैथड कहा जाता है. इस तकनीक में पहले मिट्टी को स्थिर और मज़बूत किया जाता है, फिर सुरंग और निर्माण का काम किया जाता है. इससे क्षेत्र की सबसे कठिन परियोजनाओं में से एक को पूरा करना संभव हुआ. एक और बड़ी चुनौती ऊंचाई पर पुलों को स्थायी रूप से मजबूत बनाना था, क्योंकि यह क्षेत्र भूकंप प्रभावित है. इसके लिए भी विशेष डिज़ाइन और उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल किया गया, जिससे पुल सुरक्षित और मज़बूत बन सके. यह स्वदेशी नवाचार पूरी दुनिया के लिए ऐसे ही भौगोलिक क्षेत्रों में एक मॉडल है. हज़ारों अभियंताओं, श्रमिकों और स्थानीय लोगों ने मिलकर इसे संभव बनाया. जब भारत निर्माण करने की ठान लेता है तो वह अद्वितीय निर्माण करता है.

क्षेत्र को लाभ- रेलवे को विकास का इंजन माना जाता है. यह नए बाज़ारों को करीब लाता है और व्यापार के अवसरों का सृजन करता है. नई रेल लाइन मिज़ोरम के लोगों का जीवन स्तर सुधारेगी. राजधानी एक्सप्रेस की शुरुआत के साथ ही आइजोल और दिल्ली के बीच की यात्रा का समय 8 घंटे कम हो जाएगा.

(लेखक, केन्द्रीय रेल, सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना एवं प्रसारण मंत्री हैं)

तमिलनाडु में प्रभाव बढ़ाने में लगी बीजेपी

तमिलनाडु में माहौल बनाने की कोशिशों के तहत प्रधानमंत्री मोदी ने चोल राजाओं का धर्मदंड सेंगोल लाकर संसद में स्थापित किया था. उन्होंने काशी तमिल संगमम का वार्षिक आयोजन भी शुरू करवाया. गंगईकोंडा चोलापुरम के शिवमंदिर में उन्होंने प्रार्थना की जिसका निर्माण राजा राजेंद्र चोल ने किया था.

दक्षिण भारत में कर्नाटक को खो देने के बाद बीजेपी तमिलनाडु पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही है. उसने सीपी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति बनवाकर तमिलों का दिल जीतने का उल्लेखनीय कदम उठाया है. इसके पहले बीजेपी ने तमिल नेता के. अन्नामलई को अपने साथ लिया था. तमिलनाडु राज्य बीजेपी अध्यक्ष रहते हुए अन्नामलई ने डीएमके व एआईएडीएमके दोनों को कमजोर कर बीजेपी का आधार मजबूत करने की कोशिश की थी. 2024 के लोकसभा चुनाव में अन्नामलई के प्रयासों से बीजेपी को दहाई में सीटें मिली थीं. बाद में कोयंबतूर में हुए चुनाव में अन्नामलई हार गए थे. उनके बढ़ते कद पर डीएमके ने ग्रहण लगा दिया. अब तमिलनाडु विधानसभा का चुनाव निकट आ रहा है, जिसे देखते हुए बीजेपी अपनी राजनीति में बदलाव ला रही है. अन्नामलई को दरकिनार कर दिया गया है, ताकि बीजेपी फिर से अभा अन्नाद्रमुक के साथ चुनावी गठबंधन कर सके. इस दौरान तमिलनाडु में एक नई राजनीतिक ताकत उभर रही है. अभिनेता जोसेफ विजय ने अपनी नई पार्टी बनाई है, जिसका नाम है- तमिलगा वेट्टी कझगम ! तमिलनाडु की राजनीति फिल्मी चेहरों से प्रभावित रही है. एमजी रामचंद्रन व जयललिता फिल्म व राजनीति में समान रूप से सफल रहे थे. दोनों ही मुख्यमंत्री बने. करुणानिधि फिल्म पटकथा लेखक होने के साथ ही राज्य के सीएम रहे. कमलहासन व रजनीकांत को वैसी सफलता नहीं मिल पाई. ऐसा माना जाता है कि अभिनेता जोसेफ विजय को डीएमके और ईसाई समुदाय की मदद मिल सकती है. तमिलनाडु का ईसाई समुदाय बीजेपी के खिलाफ रहा है. जहां तक बीजेपी की बात है, उसने पश्चिमी तमिलनाडु में अपना प्रभाव बढ़ाया है. वह सवर्णों की पार्टी मानी जाती है. इस दक्षिणी राज्य में पैर जमाने के लिए बीजेपी को कम से कम 20 प्रतिशत लोगों को अपने साथ लेना होगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

महाकौशल की डायरी

शहडोल में बदल रही सियासी तस्वीर

अविनाश दीक्षित

संगठन में हुए बदलाव और नए नेतृत्व के उदय ने शहडोल की भाजपाई सियासत को नया रूप दे दिया है. अब मंचों और सार्वजनिक कार्यक्रमों में वह चेहरे नजर आने लगे हैं जो एक-डेढ़ दशक से लगभग हाशिए पर नजर आ रहे थे. इनमें से कई चेहरे तो ऐसे हैं जिनकी सांगठनिक क्षमताओं के लोग कायल रहे, मगर नये शक्ति केंद्र उभरने के चलते उन्हें नेपथ्य में जाना पड़ गया.

पिछले दिनों मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का शहडोल प्रवास हुआ. उनके दौरे के बाद सोशल मीडिया में कुछ तस्वीरें वायरल हुईं जिसके चलते भाजपाई हल्कों में नई चर्चाओं का बाजार सरगर्म हो गया. इनमें से एक तस्वीर भगवादल की जिला अध्यक्ष अमिता चपरा ने साझा की, जिसमें वह मुख्यमंत्री के साथ जयसिंह नगर विधायक मनीषा सिंह, वरिष्ठ नेता दौलत मनवानी, अमित मिश्रा के साथ नजर आ रहीं हैं. स्मरण रहे कि भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष कमलप्रताप सिंह के कार्यकाल में स्थानीय राजनीति और प्रशासनिक कामकाज उनके एवं कुछ खास समर्थकों के इशारे पर केंद्रित होता था, किन्तु अब परिदृश्य बदला-बदला नजर आने लगा है. कुछ समय पूर्व तक विधायक मनीषा सिंह तथा अमिता चपरा के मध्य एक तनावमिश्रित दीवार खड़ी दिखाई देती थी, अब वह अमिता चपरा के साथ मंच साझा करती दिखाई देतीं हैं, वहीं दौलत मनवानी एवं अमित मिश्रा पहले की तुलना में ज्यादा सक्रिय दिखाई देने लगे हैं. स्थानीय राजनीति के जानकारों का मानना है कि हालिया वायरल तस्वीरें महज रस्मी मुलाकात की बानगी नहीं, अपितु यह संकेत हैं कि अब शहडोल के राजनीतिक और प्रशासनिक परिदृश्य में एक नई धुरी उभर रही है, जिसका प्रभाव पार्टी के सांगठनिक कामकाज के साथ जिले के विकास कार्यों पर भी पड़ेगा.

ए ग्रेड की कामयाबी पर पलीता लगा रहे जिम्मेदार....

हर बार की तरह इस बार भी रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय नए शैक्षणिक सत्र के 5 महीने बीत जाने के बाद किसी भी विषय के परीक्षा परिणाम घोषित नहीं कर पाया है. विदित हो कि पहले नैक द्वारा ए ग्रेड यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया गया था लेकिन विश्वविद्यालय के लापरवाह कर्मचारी इस रैंकिंग पर पलीता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं.

नतीजा विवि के छात्र अपने आप को ठगा सा महसूस करने लगे हैं. छात्र संगठन ने इस विषय को लेकर हाल ही में प्रदर्शन भी किया था, छात्रों के ज्यादा विरोध के बाद रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राजेश वर्मा ने ये स्वीकार किया है कि रिजल्ट में देरी हो रही है और उन्होनें अब मूल्यांकन कार्य में तेजी लाने अधीनस्थों को निर्देश जारी कर दिए हैं.

वायरल हुआ बरगी विधायक का जश्न

बीते कुछ दिनों में देखा गया है कि सत्ता का नशा भाजपा विधायकों में इस कदर चढ़ गया है कि वो प्रशासन को भी चुनौती देने से नहीं चूक रहे हैं. ताजे मामले की बात करें तो बरगी विधायक नीरज सिंह लोधी ने अपने जन्मदिवस पर तलवार लहराते हुए केक काटा, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया. जैसे ही विधायक द्वारा तलवार से केक काटने का वीडियो जनता के सामने आया, उसके थोड़ी देर बाद जनता की ओर ये प्रतिक्रियाएं सामने आने लगीं कि जबलपुर का कोई भी आम नागरिक ऐसे तलवार लहराकर केक काटता तो स्थानीय पुलिस उसे ढूंढ़कर ऑर्म्स एक्ट के तहत अपराधी बनाकर कार्रवाई कर देती लेकिन इस मामले में सत्ता पक्ष के विधायक ने ये काम किया है, इसलिए पुलिस ने भी हाथ नहीं डाला है. इससे ये साफ हो गया है कि सारे नियम कानून सिर्फ जनता के लिए ही हैं. सत्ताधारी पार्टी के नेता, विधायकों के लिए ये कानून कोई मायने नहीं रखते. इसके पहले कटनी जिले की विजयराघवगढ़ विधानसभा के विधायक संजय पाठक ने लंबित प्रकरण के सिलसिले में मप्र हाईकोर्ट के न्यायाधीश को फोन लगाने की कोशिश की थी. इस मामले ने भी काफी सुर्खियां बटोरीं थीं .चर्चा है की संजय पाठक के इस कृत्य के बाद उनके केस की पैरवी करने में अधिवक्ता कन्नी काटना चाह रहे हैं. आगे क्या होगा, यह तो बाद में पता चलेगा, मगर इन मामलों से यह साफ जाहिर हो रहा है कि यदि आप सत्ता पक्ष में हो तो आप कानून के सिस्टम को भी झुका सकते हो.

निशानेबाज

कभी प्रतिस्पर्धा, कभी तालमेल राजनीति में भी खो-खो का खेल

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, भारत में क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, टेनिस, बैडमिंटन जैसे कितने ही खेल विदेश से आए, जिन्हें हमने अपना लिया, लेकिन अब हम अपने देश के खेल खो-खो को 2036 के ओलंपिक में शामिल करने की कोशिश करेंगे. इसकी शुरूआत भारत ने खो-खो विश्वकप के आयोजन से कर दी. बीजेपी नेता सुधांशु मित्तल खो-खो फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष होने के साथ-साथ ही अंतरराष्ट्रीय खो-खो फेडरेशन के भी अध्यक्ष हैं. सबसे पहले 1936 के बर्लिन ओलंपिक में खो-खो खेल का प्रदर्शन किया गया था. 2020 में 6 देशों ने खो-खो में भाग लिया और अब 2025 में 55 देशों में यह खेल लोकप्रिय हो गया. हमने कहा, खो-खो में बहुत चपलता लगती है. जैसे ही बैठे हुए खिलाड़ी की पीठ पर खो कहते हुए हाथ लगाया, उसे तुरंत दौड़ना पड़ता है. स्कूलों और खासकर लड़कियों में खो-खो काफी लोकप्रिय है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, खो-खो वर्ल्ड कप

आयोजित करने से पहले काफी मेहनत की गई. इंटरनेशनल खो-खो फेडरेशन ने 16 देशों के 62 कोच को दिल्ली बुलाकर ट्रेनिंग दी और फिर ये कोच रूअपने देश लौटकर टीम तैयार करने लगे. ऑस्ट्रेलिया, पोलैंड, नेपाल, नीदरलैंड व ब्राजील की खो-खो टीम ने वर्ल्ड कप में भाग लिया. हमने कहा, राजनीति में भी खो-खो खेला जाता है. नए उत्साही, ऊर्जावान नेता पुराने नेता को खो कहकर भगा देते हैं. किसी पुराने मुख्यमंत्री को उसके प्रतिस्पर्धी सीधे दिल्ली भगा देते हैं, जहां वह केंद्रीय मंत्री बन जाता है. बुजुर्ग नेताओं को खो कह देने पर वह सीधे परामर्शदाता मंडल में चले जाते हैं. शरद पवार ने सिर्फ 38 वर्ष की उम्र में वसंतदादा पाटिल को मुख्यमंत्री पद से खो कर दिया था. जो नेता चपल रहता है, वह चैंपियन बन जाता है.

कुछ नेता केंद्र और राय के 2 खंभों के बीच इधर से उधर भागते रहते हैं. राजनीति में दिशाहीनता हो सकती है, लेकिन खो-खो में यदि एक खिलाड़ी उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठता है तो उसके बाजू वाला दक्षिण दिशा की ओर ! खो-खो कैसा होता है, खेलो तो जानो !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12019 -डॉ. सागर खादीवाला

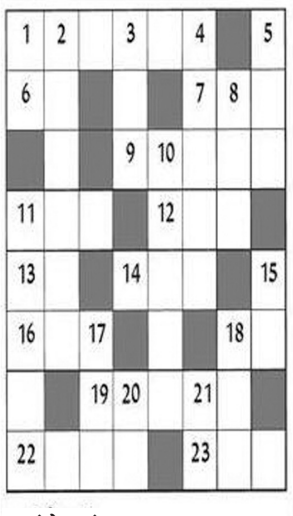

पृथ्वी के नीचे के लोगों का छठा लोक 23. निगलना

ऊपर से नीचे

1. शाख.. हरताल, एक पौधा या उससे बना रंग, बेटी की संतान, वंशज 2. देखने में सुंदर 3. चीरना 4. नमक निकालने या बनाने का स्थान (उर्दू) 5. कीर्तिगायक, भाट (सं.) 8. निपटाना, बनाना 10. सहायक, सहायता करने वाला 11. अमृत का समुद्र (सं.) 15. तस्वीर, रेखाओं अथवा रंगों द्वारा बनी हुई किसी वस्तु की आकृति 17. नष्ट किया हुआ (सं.) 18. किसी कार्य का अपनी ओर से आरंभ 20. समय, मृत्यु 21. दुर्वचन, कलंकपूर्ण आरोप, गंदा शब्द

बाएं से दाएं

1. अतिशीघ्र, तुरंत, बात की बात में (उर्दू) 6. धुन, गीत गाने का सुंदर ढंग 7. मगर या घड़ियाल, बारह राशियों में से एक 9. नाम रखने का काम या संस्कार 11. ऐसा समय जिसमें भोजन खूब मिले तथा अन्न की उपज पर्याप्त हो, सुकाल (सं.) 12. बिछाना 13. प्रवाह, किसी दिशा में किसी वस्तु या तत्व का निरंतर प्रवाहित होना, दफा 14. रूपवान, खूबसूरत 16. प्रतियोगिता, भेंट, मुलाकात 18. चिट्ठी, खत, पर्ण 19. शिकार खेलने की जगह (उर्दू) 22.

Solution 12018

चु	र	चु	रा	ना		प	ल
ट	स	क	ना		भ	ती	जा
कु		वा		च		ला	ना
ला	ल	ना		रि	पु		
	ड़		प	त्र	का	रि	ता
ल	ख	ल	खा		र	क्त	प
स	ड़ा		र	ट	ना		मा
	ना	ट	ना			दा	न

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, यात्रा का योग है, व्यय में कमी होगी, व्यवसाय में सुधार होगा, वर्ष के मध्य में परिश्रम के उपरांत आंशिक सफलता प्राप्त होगी, शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, अत्याधिक व्यय होगा, वर्षके अन्त में राजनैतिक लाभ के योग हैं, व्यवसाय में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को परिश्रम के उपरांत लाभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम करना पडेगा, पर लाभ कम होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक लाभ होगा,सिंह राशि के व्यक्तियों को सहयोगरहेगा, मकर और कुंभ राशि की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अच्छे लाभ का योग है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सहयोग प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक लगनशील स्वाभिमानी तथा सुन्दर कर्मठ, दूसरों के प्रति सहृदयता एवं उदारता से व्यवहार करेगा. स्पष्टवादी होगा. अपने कार्यो को सहर्ष स्वयं करेगा. इसके मित्रों की संख्या सीमित होगी. यात्रा और मनोरंजन का शौकीन होगा.

मेष- रोजगार की तरफ प्रयास करें, सफलता मिलेगी. पारिवारिक में उत्साह बना रहेगा. अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें. उपहार मिलेगा.

वृषभ- रचनात्मक प्रयास सार्थक होगा. मांगलिक कार्यो पर अंतिम विचार होगा. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. पद प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

मिथुन- पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. कामकाज की अधिकता रहेगी. परिजनों का सहयोग रहेगा. निजी कामकाज बनने का योग प्रबल है.

कर्क- कोई ऐसा कार्य बनेगा, जिससे आपको संतोष रहेगा. महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी. मान प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होगा.

सिंह- मनोरंजन तथा धार्मिक स्थल की सैर होगी. किसी अभिन्न मित्र से भेंट होगी. लाभ होगा. सामाजिक कार्यो में वृद्धि होने का योग प्रबल है.

कन्या- स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. खानपान पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. मधुरता और साहसिक कार्यो में वृद्धि होगी. नियमितता बनी रहेगी.

तुला- व्यवसायिक मामलों में जोखिम से बचने का प्रयास करें. रक्त विकार या नेत्र पीड़ा हो सकती है. विवादित मामलों को न बढ़ायें. सुख रहेगा.

वृश्चिक- जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. अनचाही यात्रा से बचें. उठाईगीरों से सावधान रहें. आपके कार्यो में परिश्रम अधिक करना होगा.

धनु- कुछ मानसिक तनाव रह सकता है. व्यर्थ के वाद विवाद से बचें. मन मुताबिक प्रस्ताव प्राप्त होने से मानसिक प्रसन्नता का योग प्रबल है.

मकर- लंबी दूरी की यात्रा का योग है. किसी नवीन योजनाओं का विचार गंभीरता से होगा. व्ययभार अधिक होगा. लाभ सामान्य रहेगा.

कुम्भ- आर्थिक मामलों में प्रगति होगी. संयम से कार्य करना हितकर रहेगा. पारिवारिक कार्यो में संलग्नता रहेगी. अतिथि आगमन का योग है.

मीन- पुराने आर्थिक मामलों में प्रगति होगी. धैर्य से कार्य करें. मैत्री संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. सामान्य प्रतिष्ठा वृद्धि होगी. शुभ सूचना मिलेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

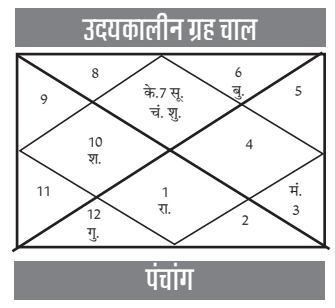

पंचांग

रा.मि. 21 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण पंचमीं भृगुवासरे दिन 1/31, भरणी नक्षत्रे शाम 4/19, व्याघात योगे शाम 6/52, तैतिल करणे सू.उ. 5/52 सू.अ. 6/8, चन्द्रचार मेष रात 9/54 से वृषभ, पर्व- पंचमीं श्राद्ध, षष्ठी श्राद्ध, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक-3,5,9.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण पंचमीं को भरणी नक्षत्र के प्रभाव से वनस्पति तेल, सरसों, अरंडी, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. गेहूँ, सोना, चांदी, के भाव में सामान्य स्थिति रहेगी. सोना, चांदी लोहा के भाव में उतार चढाव आयेगा. भाग्यांक 1507 है.

SUDOKU 7151

7	4	6		1		8		2
	5		8		7			
9				6				
	6		7	9		5		3
5				4				1
3		1		8	2		7	
				5				6
			4		3		9	
4		3		2		1	5	7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7150

8	7	9	4	2	5	6	1	3
5	6	3	8	1	7	4	2	9
4	1	2	6	9	3	5	8	7
1	9	8	3	7	4	2	6	5
7	3	4	2	5	6	8	9	1
2	5	6	1	8	9	7	3	4
9	8	5	7	3	2	1	4	6
6	2	7	9	4	1	3	5	8
3	4	1	5	6	8	9	7	2